लता मंगेशकर आरती हनुमान जी की गीत

लता मंगेशकर आरती हनुमान जी की गीत
॥ श्री हनुमंत स्तुति ॥ ॥

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं, बुद्धिमतां वरिष्ठम् ॥

वातात्मजं वानरयुथ मुख्यंयुथ मुख्यं,
श्रीरामदुतं शरणम प्रपद्धे ॥

े ॥

॥ आरती ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।ती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥घुनाथ कला की ॥

जाकेबल से गिरवर काँपे ।
ाँपे ।
रोग-दोष जाकेनिकट न झाँके॥

ाँके॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई ।
पुत्र महा बलदाई ।
संतन केप्रभु सदा सहाई ॥

आरती कीजै हनुती कीजै हनुमान लला की ॥

दे वीरा रघुनाथ पठाए ।
घुनाथ पठाए ।
लंका जारि सिया सुधि लाये ॥ुधि लाये ॥

लंका सो कोट समुद्र सी खाई ।
ी खाई ।
जात पवनसुत बार न लाई ॥

न लाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥ती कीजै हनुमान लला की ॥

लंका जारि असुर संहारे । असुर संहारे ।
सियाराम जी केकाज सँवारे ॥ँवारे ॥

लक्ष्मण मुर्छित पड़े सकारे ।
ेसकारे ।

लाये संजिवन प्राण उबारे ॥वन प्राण उबारे ॥

आरती कीजै ती कीजै हनुमान लला की ॥

पैठि पताल तोरि जमकारे ।
े ।
अहिरावण की भुजा उखारे ॥े ॥

बाईं भुजा असुर दल मारे ।
े ।
दाहिने भुजा संतजन तारे ॥े ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ॥ती कीजै हनुमान लला की ॥

सुर-नर-मुनि जन आरती उतरें ।
जन आरती उतरें ।
जय जय जय हनुमान उचारें ॥

कंचन थार कपूर लौ छाई ।
आरती करत अंजना माई ॥

आरती कीजै हनुमान ललाती कीजै हनुमान लला की ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे ।ती गावे ।
बसहिं बैकुंठ परम पद पावे ॥म पद पावे ॥

लंक विध्वंस किये रघुराई ।
ाई ।
तुलसीदास स्वामी कीर्तिगाई ॥

स्वामी कीर्तिगाई ॥

आरती कीजै हनुमान लला की ।ती कीजै हनुमान लला की ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥घुनाथ कला की ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥णंम् ॥